Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, Impact Factor: 6.889, Volume 12, No. 03, July-September 2022, pp. 101-107

चयनित सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के बैंकों की उपार्जन गुणवत्ता का विश्लेषणात्मक अध्ययन (बैंक ऑफ बड़ौदा एवं आई.सी.आई.सी.आई.बैंक के विशेष संदर्भ में)

कु. छाया शाक्य*
डॉ. एस.के. खटीक**

सार

बैंक एक ऐसी वित्तीय संस्थान है जो अर्थव्यवस्था में वित्त के सुचारू प्रवाह को व्यवस्थित करने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बैंक की वित्तीय स्थिति मजबूत और लंबे समय तक स्थिर रखने हेतु उपार्जन क्षमता महत्वपूर्ण तत्व होता है। बैंक की पूंजी को बढ़ाने के लिए बैंक का उपार्जन और उसकी लाभप्रदता मुख्य स्रोतों में शामिल है, जिसे नेट इंटरेस्ट मार्जिन और संपत्तियों पर वापसी द्वारा मापा जा सकता है। भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण बैंक की उपार्जन गुणवत्ता का मूल्यांकन करना आवश्यक हो जाता है जिसके लिए वर्तमान अध्ययन में कुल दो बैंकों को शामिल किया है जिसमें एक सार्वजनिक क्षेत्र की बैंक ऑफ बड़ौदा एवं दूसरी निजी क्षेत्र की आईसीआईसीआई बैंक शामिल हैं। शोध अध्ययन हेतु वर्ष 2017–18 से वर्ष 2021–22 वित्तीय वर्षों को को शामिल किया गया है। अध्ययन से पता चलता है कि चयनित बैंकों में से निजी क्षेत्र के बैंकों की उपार्जन गुणवत्ता सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की तुलना में बेहतर है।

शब्दकोश. *उपार्जन क्षमता, लाभप्रदता, नेट इंटरेस्ट मार्जिन, उपार्जन गुणवत्ता, शोध अध्ययन।*

प्रस्तावना

बैंकिंग उद्योग देश के प्रमुख उद्योगों में से एक है। देश के आर्थिक विकास में बैंकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बैंक जनता में बचत की आदत को प्रोत्साहित करता है और अपने ग्राहकों को ब्याज के रूप में अच्छी वापसी (रिटर्न) भी प्रदान करता है। बैंक आमतौर पर अपनी जमा राशि से विभिन्न प्रकार के निवेश और ऋण देने के रूप में करते हैं और एक अच्छी वापसी (रिटर्न) प्राप्त कर हैं, अर्थात हम कह सकते हैं कि वह बचत कोष को निवेश में लगाता है। भारतीय बैंकिंग प्रणाली आज प्रौद्योगिकी के साथ संचालित हो रही है और नई नई चुनौतियों का सामना करने में भी सक्षम है। वर्तमान में बैंकिंग का क्षेत्र बहुत बड़ा और विस्तृत है, बैंकिंग आज सिर्फ महानगरों तक ही सीमित नहीं है बल्कि देश के दूरदराज के कोने कोने तक पहुंच चुकी है।

किसी भी व्यवसाय को उसकी उपार्जन शक्ति द्वारा मापा जाता है इसलिए बैंकिंग क्षेत्र में उपार्जन गुणवत्ता महत्वपूर्ण मानी जाती है। उपार्जन गुणवत्ता एक महत्वपूर्ण मापदंड होने के कारण बैंक लगातार अपनी उपार्जित शक्ति की जांच को समय–समय पर करता है। बैंक अपनी लाभप्रद नेता की गुणवत्ता और भविष्य में होने वाली आय में स्थिरता और वृद्धि को बनाए रखने के लिए अपनी उपार्जन क्षमता की जांच करता है। शोधार्थी द्वारा बैंकों की उपार्जन गुणवत्ता अध्ययन हेतु CAMEL (केमल) मॉडल रेटिंग सिस्टम का उपयोग किया गया है जिसमें शोधार्थी द्वारा कुल आय पर ब्याज आय अनुपात, कुल संपत्ति का शुद्ध ब्याज मार्जिन अनुपात, समता पर वापसी अनुपात, कुल संपत्ति का परिचालन लाभ अनुपात का उपयोग करते हुए अध्ययन किया गया।

---

* शोधार्थी, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्यप्रदेश।
** प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, वाणिज्य विभाग, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्यप्रदेश।

शोध विषय अध्ययन का औचित्य

वर्तमान समय में बैंकिंग क्षेत्र मे काफ़ी प्रतिस्पर्धा हैं। प्रत्येक बैंक अपनी पूर्ण कार्य क्षमता के साथ बैंकिंग कार्य कर रहा है चाहे वह निजी क्षेत्र का बैंक हो या सार्वजनिक क्षेत्र का क्योंकि दोनों बैंक अपने उत्तरदायित्व को पूर्ण रूप से निर्वहन कर रहे हैं। सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र के दोनों बैंकों की उपार्जन गुणवत्ता में कोई अंतर है अथवा नहीं इस जिज्ञासा ने इस विषय पर शोध कार्य करने हेतु प्रेरित किया इसलिए शोधार्थी द्वारा चयनित सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र के बैंकों की उपार्जन गुणवत्ता का विश्लेषणात्मक अध्ययन शोध कार्य करने हेतु चुना गया।

शोध साहित्य का पूर्वावलोकन

काजल चौधरी और मोनिका शर्माः (शोध पत्र जून 2011 पेज नं. 249–256 वाल्यूम नं. 2 इटंरनेशनल जर्नल ऑफ मैनेजमेन्ट 2250–2253) भारतीय सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों और निजी क्षेत्र के बैंकों का वित्तीय प्रदर्शन एक तुलनात्मक अध्ययन इनके द्वारा शोध पत्र में भारत मे आर्थिक सुधार के बारे मे वताया गया इसके साथ ही इस शोध पत्र में बैंकों के कामकाज की जगह के बाद उदारीकरण वैश्वीकरण और निजीकरण बन गया। इस शोध अध्ययन में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक व निजी क्षेत्र के बैंकों की सेवाओ की तुलना में विश्लेषण अध्ययन करना अनिर्वाय हैं। इस शोध अध्ययन में बैंकिंग क्षेत्र मे बढी प्रतिस्पर्धा नई सूचना प्रौद्योगिकी और इस प्रकार प्रसस्करण लागत में गिरावट उत्पाद का ऋण और भौगोलिक सीमाए और कम प्रतिबंधक सरकारी नियमों ने सभी सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में एक प्रमुख भूमिका निभाई है। इस शोध अध्ययन में एन.पी.ए. बारे में भी दर्शाया गया हैं,कि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक व निजी क्षेत्र के बैंकों से हो रही लाभप्रदता मे कमी इस शोध अध्ययन में बैंकों के राष्ट्रीयकरण के बारे में बताया है।जिसमें भारतीय स्टेट बैंक के सहयोगी बैंकों के बारे में वताया गया है बैंकों में हो रही गैर निष्पादित सम्पति (एन.पी.ए.) के कारण हानियाँ का भी पता लगया गया।

डॉ. के मधुसदन रावः (शोध पत्र–अप्रैल जून–2014, वाल्यूम –2 पेज नं. 104 – 109 पेन – 2348–0653) निजी और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकिंग पर एक विश्लेषण प्रणाली – इन्होने अपने शोध अध्ययन में वताया हैं,कि भारत के बैंकिंग प्रणाली की शाखाओ को एक बड़े नेटर्वक द्वारा जोडना दिखाया गया हैं जिससे लोगो को कई प्रकार की वित्त व वित्तीय सेवाओं की सुविधा मिल सके। इस अध्ययन में एस.बी.आई. बैंक जो एक अग्रणी बैंक हैं। एस बी आई के पास 14 स्थानीय कार्यालय और 57 क्षेत्रीय कार्यालय पूरे देश मे स्थित हैं। इसके साथ ही इस शोध अध्ययन में एच.डी.एफ.सी.बैंक लिमिटेड के बारे में भी वताया गया हैं, कि यह मुम्बई मे स्थित वित्तीय सेवा सेवा कम्पनी है। वर्तमान में पूरे भारत में 996 शहरों में 2201 शाखाओं कें साथ 7110 ए.टी. एम. है। इस अध्ययन का उद्येश्य एस बी आई और एच.डी.एफ.सी.बैंक सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की वित्तीय प्रदर्शन की जाँच करना है,तथा इसके साथ ही निजी क्षेत्र के बैंकों की भी जो चयन किए गए हैं। इस अध्ययन की शोध प्रकृति वर्णानात्मक और विश्लेषणात्मक हैं, इस शोध अध्ययन के लिए उपयोग की गई सामग्री व आंकडो माध्यमिक स्तर पर आधारित है।

राकेश कुमार (शोध पत्र मार्च 2014,पेज नं.147–153, वाल्यूम नं. 2 इटंरनेशलन जर्नल ISSN–2347–6915) वित्तीय सकंट के बाद भारतीय बैंकों का प्रदर्शन (चयनित बैंकों का एक तुलनात्मक अध्ययन) – इनके द्वारा प्रस्तुत शोध पत्र में भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में आए वित्तीय संकट के बारे में वताया गया हैं। इन्होने अपने शोध अध्ययन में पिछले कुछ वर्षो से हो रहे बैंकिंग क्षेत्र के बदलाव के बारे में भी वताया गया हैं, कि सन् 2008 में वैश्विक वित्तीय संकट के कारण बैंकिंग क्षेत्र में जबरदस्त बदलाव देखे गए इसके साथ ही साथ बैंकिंग क्षेत्र में वित्तीय संकट के बाद बैंकों की वित्तीय स्थिति में भी विकास देखा गया। लेकिन यह विकास भारतीय बैंकों की वित्तीय स्थिति के प्रदर्शन को प्रभावित करता है। यह शोध अध्ययन बैंकिंग क्षेत्र की वर्तमान आर्थिक परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं। इस शोध अध्ययन में चयनित सार्वजनिक क्षेत्र व निजी क्षेत्र व विदेशी क्षेत्र के तीन तीन बैंक चुने गए हैं।

अमित कुमार सिंह (शोध पत्र मई 2015 वाल्यूम 5 ISSN-2250.3153 जर्नल पेज नं. 1 से 11 तक भारत में निजी बैंक की लाभप्रदता स्थिति का विश्लेषण) – इनके द्वारा शोध पत्र में कहा गया है कि लाभ व्यापार की सफलता तथा इसके अस्तित्व के विकास के साधनो का एक उपाय हैं जिसमें लाभप्रदता अपने मालिको के लिए लाभ कमाने वाले एक व्यवसाय की क्षमता पर निर्भर रहता हैं। इस शोध अध्ययन का उद्वेश्य भारत में विभिन्न निजी क्षेत्र के बैंकों की लाभप्रदता अनुपात के आधार पर लाभप्रदता, अनुपात शुद्ध लाभ मार्जिन, दीर्घकालिन धन पर वापसी, शुद्ध मूल्य पर वापसी, सम्पतियों पर वापसी तथा समायोजित नकद मार्जिन के आधार पर विभिन्न निजी क्षेत्र के बैंकों का समग्र लाभप्रदता का विश्लेषण करना इसके अलावा इस शोध अध्ययन मे व्यवसाय तथा निजी क्षेत्र के बैंकों की लाभप्रदता की दक्षता को नियंत्रण करना तथा जिससे इसकी दक्षता को और भी प्रभावशील बनाया जा सके।

शोध विषय अध्ययन के उद्देश्य

- चयनित बैंकों की संपत्ति पर ब्याज आय की वापसी (रिटर्न) का करना।
- चयनित बैंकों की कुल संपत्ति पर परिचालन लाभ की जांच करना।
- कुल संपत्ति पर ब्याज आय मार्जिन की जांच करना।
- समता पर वापसी (रिटर्न) का पता लगाना।

शोध विषय अध्ययन की परिकल्पना

शोध अध्ययन में निम्नलिखित H_0 परिकल्पना की गई

- H_{01} कुल आय पर ब्याज के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- H_{02} चयनित बैंकों की कुल संपत्ति और परिचालन लाभ के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- H_{03} चयनित बैंकों की समता पर वापसी मे कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विषय के अध्ययन की संरचना

इस शोध संरचना में समंको एवं साहित्य का होना अनिवार्य है इस शोध कार्य हेतु हमने द्वितीय समंको का उपयोग किया हैं। इस अध्ययन में बैंको के वार्षिक प्रतिवेदन का प्रयोग किया गया हैं। इस शोध विषय के अध्ययन में लिए गए उद्देश्यों का विस्तार पूर्वक विश्लेषण किया गया हैं। इसी प्रकार इस शोध विषय के अध्ययन में ली गई परिकल्पनाओं का भी परीक्षण सहसंबंध के माध्यम से स्टूडेंट टी टेस्ट के द्वारा किया गया हैं।

शोध विषय के अध्ययन की सीमाएं

शोध अध्ययन की सीमाएं इस प्रकार हैं–

- प्राप्य समंको एवं साहित्य का अभाव है यह शोध विषय के यह अध्ययन सीमांत अवधि 2017–18 की अवधि से 2021–22 तक है।
- इस अध्ययन में द्वितीय समंको का उपयोग किया गया है। इनकी विश्वसनीयता अंकेक्षण पर निर्भर करती है।
- समंको का समूहीकरण, वर्गीकरण, शोध विषय के अध्ययन की आवश्यकताअनुसार किया गया हैं
- इस शोध विषय के अध्ययन में केवल दो बैंकों को लिया गया है।

विश्लेषणात्मक अध्ययन

किसी भी संस्था या व्यवसाय की स्थापना और संचालन में लाभ प्रमुख रूप से अंतर्निहित होता हैं, जिससे संस्था में निरंतरता बनी रहे। अच्छी शोधन क्षमता ही संस्था का प्रमुख लक्ष्य व उद्देश्य होता है। संस्था के वित्तीय विवरणों का विश्लेषण किसी विशेष उद्देश्य के लिए किया जाता है। शोधार्थी द्वारा अपने शोध अध्ययन में उपार्जन गुणवत्ता पर प्रकाश डाला हैं। शोध अध्ययन के दौरान शोधार्थी द्वारा वित्तीय विवरण में दिखाई गई विभिन्न मदों की सहायता से कैमल रेटिंग प्रणाली द्वारा उपार्जन गुणवत्ता (Earning Quality) का मापन किया हैं। जो इस प्रकार हैं–

- **E - Earning Quality (उपार्जन गुणवत्ता):** यह अनुपात बैंक के परिचालन प्रदर्शन को दर्शाता है यह भविष्य के विकास और संभावनाओं को संकेत कराता है। यह अनुपात बैंक की क्षमता और लाभ प्रदत्ता में स्थिरता को भी दर्शाता है। (Earning) उपार्जन की गुणवत्ता का आकलन करने के लिए निम्नलिखित अनुपातों का उपयोग किया गया है जो इस प्रकार से हैं–
  - कुल आय पर कुल ब्याज आय का अनुपात (Interest income to total income Ratio)
  - कुल संपत्तियों पर शुद्ध ब्याज मार्जिन अनुपात (Net interest margin to total assets Ratio)
  - समता पर वापसी (Return on Equity Ratio)
  - कुल परिसंपत्ति का परिचालन लाभ अनुपात (Operating profits to total assets)
- **कुल आय पर कुल ब्याज आय का अनुपातः** यह अनुपात कुल आय से बाहरी ब्याज आय को दर्शाता है। कुल आय में ब्याज और गैर ब्याज दोनों आय शामिल होती हैं यह बैंक की ऋण देने की क्षमता को दर्शाता है। इसका उच्च अनुपात अच्छा माना जाता हैं। (सूत्र– Total Interest Income /Total IncomeX100)
- **कुल संपत्तियों पर शुद्ध ब्याज मार्जिन अनुपातः** यह एक प्रकार का लाभप्रदत्ता अनुपात होता है जो यह मापता है कि बैंकों द्वारा खर्च और ऋण की तुलना करके निवेश के फैसले कितनी अच्छी तरह से लिए जा रहे है। दूसरे शब्दों में कहें तो यह अनुपात इस बात की गणना करता है कि बैंक अपने निवेश पर कितना रुपया कमा रहा है। आमतौर पर इस अनुपात का उपयोग बैंक अपने निवेश निर्णय का विश्लेषण करने एवं अपने ऋण देने वाली परिचालन की लाभप्रदत्ता को मापने के लिए करते हैं। इसका उच्च अनुपात अच्छा माना जाता हैं। (सूत्र– Net Int. Margin /Total AssetsX100)
- **समता पर वापसीः** यह अनुपात किसी भी व्यवसाय या बैंक द्वारा अपने अंश धारकों की क्षमता पर उत्पन्न हुई वापसी को दर्शाता है। इसका उच्च अनुपात अच्छा माना जाता हैं। (सूत्र– Net Income /Eq.Share HolderX100)
- **कुल परिसंपत्ति का परिचालन लाभ अनुपातः** यह अनुपात दर्शाता है, कि किसी भी बैंक या व्यवसाय द्वारा अपनी कुल परिसंपत्तियों में निवेश किए गए प्रत्यके रुपए के लिए वह अपने परिचालन में कितना लाभ कमा सकता हैं। (सूत्र– Total Operating Profit /Total AssetsX100)

उपार्जन गुणवत्ता

क्रमांक	बैंक	अनुपात	वर्ष 2017–2018	2018–2019	2019–2020	2020–2021	2021–2022	कुल	औसत	रैंक
1	बैंक ऑफ बड़ौंदा	कुल आय पर ब्याज आय अनुपात	86.77	89.13	88.04	88.08	85.89	437.91	87.582	1
		कुल सम्पत्ति का शुद्ध ब्याज मार्जिन अनुपात	2.16	2.39	2.37	2.49	2.55	11.96	2.392	2
		समता पर वापसी का अनुपात	5.60	0.94	0.76	1.08	8.47	16.85	3.37	2
		कुल सम्पत्ति का परिचालन लाभ का अनुपात	1.67	1.75	1.63	1.78	1.75	8.58	1.72	2

2	आई.सी. आई.सी. आई.बैंक	कुल आय पर ब्याज आय अनुपात	75.93	81.37	81.97	80.66	82.35	402.28	80.46	2
		कुल सम्पत्ति का शुद्ध ब्याज मार्जिन अनुपात	2.62	2.80	3.08	3.17	3.36	15.03	3.01	1
		समता पर वापसी का अनुपात	6.44	3.10	6.81	10.98	13.69	41.02	8.20	1
		कुल सम्पत्ति का परिचालन लाभ का अनुपात	2.81	2.43	2.56	2.96	2.78	13.54	2.71	1
स्त्रोंत– बैंक ऑफ बड़ौदा,आई.सी.आई.सी.आई. बैंक की वर्षिक रिपोर्ट 2017–18 से 2021–22									

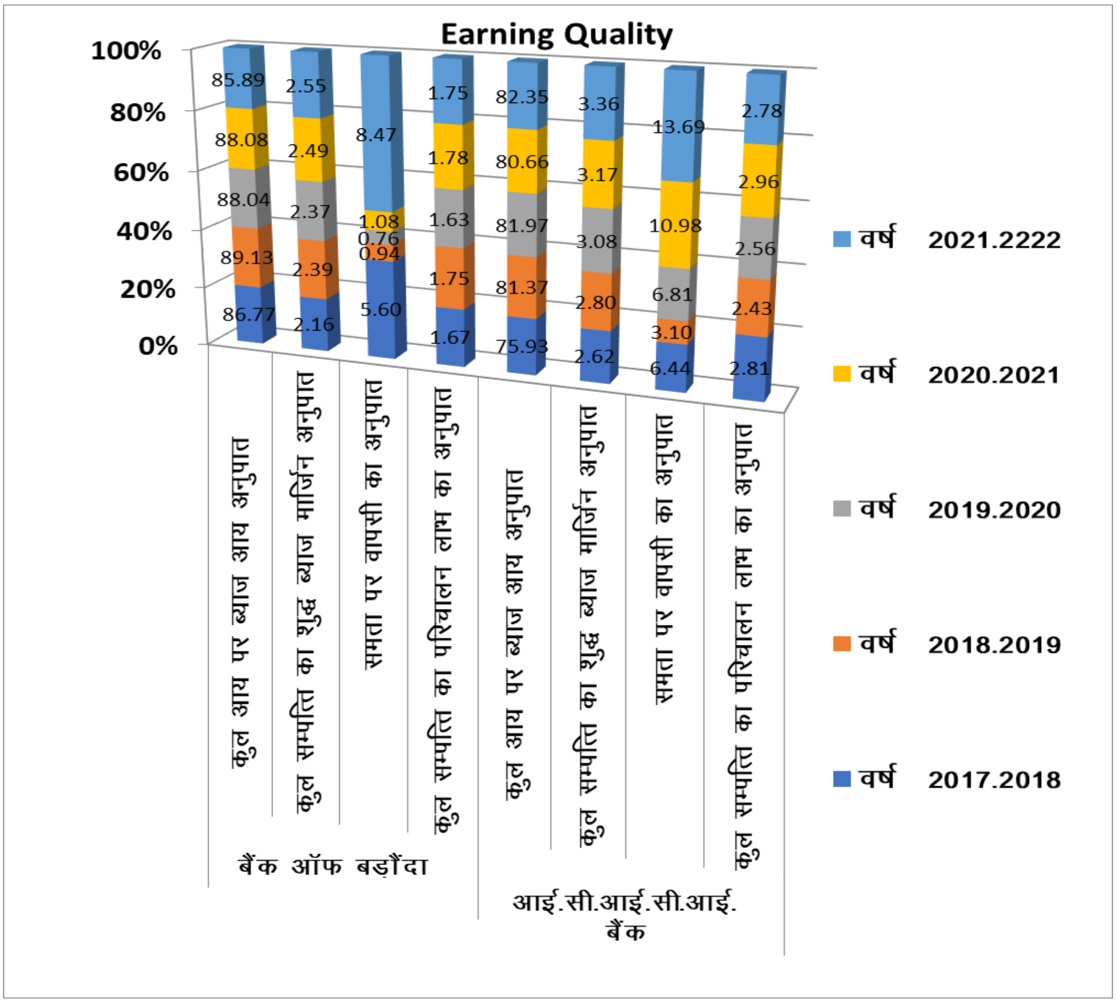

बैंकों की उपार्जन गुणवत्ता को मापने के लिए शोधार्थी ने कुल आय पर ब्याज आय अनुपात, कुल संपत्ति का शुद्ध ब्याज मार्जिन अनुपात, समता पर वापसी का अनुपात एवं कुल संपत्ति का परिचालन लाभ का अनुपात का उपयोग किया है जिसमें कुल आय पर ब्याज आय अनुपात मैं आई.सी.आई.सी.आई. बैंक की तुलना में बैंक ऑफ बड़ौदा बेहतर हैं, जबकि शेष बचे तीन अनुपातों में आई.सी.आई.सी.आई. बैंक श्रेष्ठ है अर्थात एकीकृत निष्कर्ष निकलता है कि बैंक की उपार्जन गुणवत्ता में बैंक ऑफ बड़ौदा की तुलना में आई.सी.आई.सी. आई. बैंक मजबूत स्थिति में हैं।

परिकल्पनाओं का परीक्षण

तालिका 2

सहसबंध एवं टी. विश्लेषण				
अनुपात	**सहसबंध**	**t का गणना मूल्य**	**t का सारणी मान**	
कुल आय पर ब्याज आय अनुपात	r =0.203	t = 0.363	2.306	t<t0.5
कुल सम्पत्ति का शुद्ध ब्याज मार्जिन अनुपात	r = 0.102	t = 0.175	2.306	t<t0.5
समता पर वापसी का अनुपात	r = 0.581	t = 1.234	2.306	t<t0.5

शोध विषय के अध्ययन में ली गई शून्य परिकल्पनाओं का परिक्षण इस प्रकार हैं–

- H_{01} कुल आय पर ब्याज के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।
- H_{02} चयनित बैंकों की कुल संपत्ति और परिचालन लाभ के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।
- H_{03} चयनित बैंकों की समता पर वापसी मे कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।

शोध विषय के अध्ययन में ली गई तीनो परिकल्पनाओं में गणना की गई वैल्यू सारणी वैल्यू से कम हैं, इसीलिए ली गई सभी शून्य परिकल्पना स्वीकार हैं। ब्याज आय बैंकों के लिए राजस्व का एक मूल स्रोत हैं। कुल आय पर ब्याज आय, बैंक की उधारी से आय उत्पन्न करने की क्षमता को इंगित करती है। गैर–ब्याज आय वह आय है जो बैंकों द्वारा आर.बी.आई. के पास अग्रिम और जमा पर आय को छोड़कर अर्जित की जाती हैं। धन के बेहतर उपयोग के परिणामस्वरूप बैंक को उच्च परिचालन लाभ होगा।

निष्कर्ष

पिछले 5 वर्षों में बैंक ऑफ बड़ौदा एवं आई.सी.आई.सी.आई. बैंक की उपार्जन क्षमता मे उतार– चढ़ाव रहा हैं। बैंक ऑफ बड़ौदा का कुल आय पर ब्याज आय अनुपात आई.सी.आई.सी.आई. बैंक की तुलना में अधिक रहा जबकि कुल संपत्ति का शुद्ध ब्याज मार्जिन अनुपात,समता पर वापसी अनुपात और कुल संपत्ति का परिचालन लाभ अनुपात बैंक ऑफ बड़ौदा की तुलना में आई.सी.आई.सी.आई.बैंक.का अच्छा हैं। स्थिर आय को उच्च गुणवत्ता वाला कारक माना गया है आज बैंकों ने विभिन्न क्षेत्रों में भी प्रवेश कर अपनी आय के अलावा अन्य स्रोतों की आय को भी अर्जित कर रही हैं। अध्ययन के दौरान यह पाया गया कि कुल आय पर ब्याज आय में बैंक ऑफ बड़ौदा शीर्ष पर हैं,जबकि दूसरी तरफ कुल संपत्ति के परिचालन लाभ अनुपात में दोनों बैंकों में ज्यादा अंतर देखने को नहीं मिला कुल संपत्ति का शुद्ध ब्याज मार्जिन अनुपात एवं समता पर वापसी अनुपात में बैंक ऑफ बड़ौदा की तुलना में आई.सी.आई.सी.आई.बैंक अच्छी हैं।

सुझाव

- बैंक अपने उत्पादकता में बेहतर प्रबंध और सूचना प्रणाली का उपयोग कर उसे बढ़ा सकता हैं। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक ऑफ बड़ौदा को चाहिए कि अधिक से अधिक ग्राहकों को आकर्षित करें और एक प्रभावी लागत मानक तैयार करें जिससे उन्हें लागत कम करने और आय में वृद्धि करने में मदद मिलेगी।
- परिचालन लाभ में आई.सी.आई.सी.आई. बैंक की स्थिति बैंक ऑफ बड़ौदा की तुलना में काफी अच्छी एवं स्थिर हैं। परिचालन लाभ अनुपात में दोनों बैंकों के अनुपातों में काफी अंतर हैं। बैंक ऑफ बड़ौदा का परिचालन लाभ के अनुपात में अस्थिरता हैं, जबकि आई.सी.आई.सी.आई. बैंक का परिचालन लाभ अनुपात बैंक ऑफ बड़ौदा की तुलना में काफी मजबूत रहा हैं जो बताता हे कि आई.सी.आई.सी.आई. बैंक बेहतर स्टॉफ प्रणाली और आधुनिक तकनीकों के माध्यमों का प्रयोग कर रहा हैं।
- दोनों बैंकों को चाहिए कि अधिक राशि एकत्रित करने के लिए मोबाइल बचत बैंक शुरू करें जिससे दूरदराज के क्षेत्रों में रहने वाले विभिन्न ग्राहक इसका फायदा उठा सके जिससे बैंक का कुल अग्रिम कुल जमा अनुपात में भी सुधार होगा।

- सार्वजनिक बैंकों की तुलना में निजी क्षेत्रों के बैंकों में प्रति शाखा में जमा रकम अधिक है इसका तात्पर्य है कि संसाधन जुटाने में निजी क्षेत्र के बैंक अधिकारियों की औसत क्षमता अधिक हैं। एक आम धारणा है कि ग्राहकों के साथ व्यवहार में अधिकारियों द्वारा दिखाई गई व्यक्तिगत सौंदर्य का जमा कर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है बैंक अपने उपयोग को ग्राहक अनुकूलन बनाना, अनावश्यक देरी नहीं करना शिष्टाचार पर अधिक ध्यान देना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Bodla BS, Verma R. (2006) Evaluating Performance of Banks through CAMEL Model: A Case Study of SBI and ICICI. The ICFAI Journal of Bank Management. 5(3): PP 49-63
2. Dhevika, V.P.T., Latasri, O.T.V. & Gayathri H. (2013). A Study on Financial Performance Analysis at City Union Bank. *International Journal of Advanced Research in Management and Social Sciences*, 2 (7), 53-67.
3. Dave K Kapil. (2016).'' A Comparative study of NPA in public and private sector banks in India''. IJSR Journal. Volume No. 5. Issue No. 8.
4. Madhvi, and Srivastava, A. (2016). A Comparative Study on Dominance and Performance of Banks in India Using Camel Method. SDIMT- Management Review, 3 (1), PP 70-75, ISSN 2320-5814.
5. htt p s : / /www.good re t u r n s. i n / company/icici-bank/ratios.html
6. www.icicibank.com
7. www.bankofbaroda.in
8. www.moneycontrol.com
9. Bank of Baroda and ICICI Bank Annual Report 2017 to 2022.

♦❒♦